केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करे।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	में)	प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	(अंकों में)
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15					
16					

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता ... र के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : ... नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा

उप मुख्य ... एवं निर्धारित मुद्रा

V.S...
J.M.T. P.N.-010296
Govt.EX.H.S.S.Dindori
M.-9753022081

परीक्षक के हस्ता...

...उ.मा.वि.शाहपुर
रजि.नं.-010108
मो.-8435931250

(2)

प्रश्न क्र

प्र० क्र०-01 का उत्तर

सही विकल्प का चयन कर लिखिए :-

(स) दो |

(ब) अर्थालंकार |

(अ) भगत जी |

(स) मराठी |

उ०-5) (ब) भी |

उ०-6) (अ) 1556 |

MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

प्र० क्र०-०२ का उत्तर

रिक्त स्थानो की पूर्ति कीजिए :-

उ० ... मार ।

... व्यतिरेक ।

... तीन ।

... पाठशाला ।

उ० ... डिफ डाटकाम ।

~~उ०-vi)~~

... जैनेन्द्र कुमार ।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र0-03 का उत्तर

सत्य / असत्य :-

उ0-i) सत्य ।

सत्य ।

असत्य ।

असत्य ।

उ0-v) सत्य ।

उ0-vi) सत्य ।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र०-04 का उत्तर

सही जोड़ी बनाइए :-

'क'	'उत्तर'
प्रगतिवाद	(स) 1936
यशोधरा	(द) खण्डकाव्य
कथानक	(ब) कहानी
iv) संस्कृत के मूल शब्द	(अ) तत्सम
v) यशोधर बाबू	(फ) सिल्वर वेडिंग
vi) अंतरंग. साक्षात्कार	(इ) डायरी
vii) हरिवंशराय बच्चन	(ई) हालावाद

6

कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्र० ०५ का उत्तर

एक वाक्य मे उत्तर लिखिए :-

वैराग्य ।

दुनिया रोज़ बनती है ।

दो ।

मुसीबत से बाहर निकलना।

मोहन जोदड़ो

एक से डेढ़ घण्टा ।

उ०- धर्मवीर भारती की ।

प्रश्न क्र.

प्र०-06 का उत्तर

बच्चे अपनी माता के भोजन लेकर आने की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे। उनकी माता (चिड़िया) अपने घोसले से दूर खाने की तलाश में गई थी। भूख से बिलखते बच्चे भोजन लेने गई अपनी माँ की प्रत्याशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे।

प्र०-07 का उत्तर (अथवा)

प्रयोगवाद के प्रवर्तक "सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय" हैं।

प्रयोगवाद की दो विशेषताएँ :-

इस वाद के कवियों ने अपने अहमनिष्ठ व्यक्तिवाद की अभिव्यंजना की है। वे सामाजिक जीवन से कोई सामनजस्य नहीं रखते।

2. प्रयोगवाद में रीतिकाव्य की आवृत्ति हुई है।

मध्यप्रदेश
BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र०-08 का उत्तर

दो महाकाव्यों के नाम और उनके रचनाकारों के नाम निम्नानुसार हैं :-

कामायनी → जयशंकर प्रसाद ।

रामचरितमानस → गोस्वामी तुलसीदास ।

प्र०-09 का उत्तर (अथवा)

वीर रस :-

वीर रस का स्थायी भाव ~~उत्~~ 'उत्साह' है। जहाँ काव्य में किसी व्यक्ति के उत्साह का वर्णन होता है, वहाँ वीर रस होता है।

उदा० :-

" बुन्देलों हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी ।
खूब लड़ी मरदानी वो तो झाँसी वाली रानी थी ॥"

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र०-10 का उत्तर

भक्तिन स्वयं को न बदलकर दूसरों को अपने अनुरूप बना लेती थी। मकई का रात को बना दलिया, बाजरे के तिल लगाकर बनाए पुए, भुने हुए भुट्टे के हरे दानों की खिचड़ी, सफेद महुए की लपसी आदि देहाती भोजन खिलाकर तथा लेखिका को देहाती भाषा सिखाकर भक्तिन ने लेखिका को देहाती बना दिया। इस प्रकार भक्तिन के आ जाने से महादेवी वर्मा अधिक देहाती हो गई।

प्र० - 11 का उत्तर (अथवा)

आत्मकथा और जीवनी में अंतर :-

आत्मकथा	जीवनी
1. आत्मकथा में लेखक स्वयं की कथा का वर्णन करता है।	1. जीवनी में लेखक किसी अन्य व्यक्ति के जीवन का वर्णन करता है।
2. आत्मकथा कथात्मक शैली में लिखी जाती है।	2. जीवनी वर्णात्मक शैली में लिखी जाती है।
उदा० मेरी असफलताएँ (बाबू गुलाबराय)	उदा० प्रताप नारायण मिश्र (बालमुकुन्द गुप्त)

योग पूर्व पृष्ठ

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOF SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOF SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOF SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOF SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOF SECONDARYEDUCATION ON

प्रश्न क्र.

प्र०-12 का उत्तर

निपात शब्द :-

निपात शब्द का अर्थ होता है - किसी बात पर अतिरिक्त बल देना। अतः जिन शब्दों का प्रयोग वाक्य में अतिरिक्त बल या भार देने के लिए किया जाता है, उन्हें निपात शब्द कहते हैं। जैसे :- ही, भी, तो, आदि।

उदा० :- 1. मुझे भी बाहर जाना है।
2. उसने मुझे पूछा तक नहीं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'भी' और 'तक' निपात शब्द हैं।

प्र०-13 का उत्तर (अथवा)

बालक शेखा और चुप हो गया।

2. मयूर वन में नाचते होंगे।

Laser, Inkjet & Copier Label ST-16 A4   99.1mm x 33.9mm x 16
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० 14 का उत्तर (अथवा)

यशोधर बाबू परंपरावादी और आदर्शों को मानने वाले व्यक्ति थे। उन्होंने अपने जीवन में कभी कोई वैडिंग एनिवर्सरी नहीं मनाए। वे अपने आदर्शों को बखूबी निभाते थे। किंतु आधुनिकता भी उन्हें अपनी ओर खींचती थी। यशोधर बाबू के विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाठ थी। इस अवसर पर उनके बच्चों ने उनके लिए सिल्वर वैडिंग की भव्य पार्टी रखी। इस पार्टी में उन्हे अच्छा न लगते हुए भी आनंद की अनुभूति हो रही थी। अत: इस लिए कहा गया है कि "सिल्वर वैडिंग की भव्य पार्टी यशोधर बाबू को 'समहाउ इंप्रापर' लगने के बाद भी संतोषजनक रही।"

प्र०-15 का उत्तर

समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय शैली 'उल्टा पिरामिड शैली' है। इसमें सबसे पहले सबसे महत्वपूर्ण खबरों को प्रस्तुत किया जाता है फिर घटते महत्वक्रम में खबरों को प्रस्तुत किया जाता है। इसे तीन हिस्सों में किया जाता है :-

1. इन्ट्रो - जिसमें सबसे महत्वपूर्ण खबरे होती हैं।
2. बॉडी :- इस थोड़ी कम महत्वपूर्ण खबरे होती हैं।
3. समापन

उल्टा पिरामिड शैली

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० -16 का उत्तर

रघुवीर सहाय का काव्यगत परिचय :-

दो रचनाएँ :- 1. आत्महत्या के विरुद्ध
2. हँसो-हँसो जल्दी हँसो

(i) भावपक्ष :-
रघुवीर सहाय पेशे से पत्रकार थे। पत्रकार के साथ-साथ वे एक प्रसिद्ध गद्यकार भी थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में व्यक्तिगत जीवन में घट रहीं घटनाओं, लूट-पाटों, हत्याओं, शोषणों आदि का वर्णन बहुत ही सरस ढंग से किया है। आप शोषित-पीड़ितों के बारे में पत्रकारिता के क्षेत्र में हो रहे अन्याय के बारे में भी लिखा करते थे।

कलापक्ष :-
रघुवीर सहाय जी की भाषा सरल सहज एवं अर्थभावपूर्ण है। आपने अपनी रचनाओं में सीधी-सादी बातचीत की शैली में अपने विचारों को व्यक्त किया है। आप कविताओं में ऐसे लिखते थे जैसे पत्रों-अखबारों में लिख रहे हो और आपकी यह बातचीत की शैली पाठकों के मन को छू लेती है।

MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDU

प्रश्न क्र.

(iii) साहित्य में स्थान :-

रघुवीर सहाय जी हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर है। आपका काव्य सृजन हिन्दी साहित्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसके लिए उन्हें भारत सरकार ने कई पुरुस्कारों से सम्मानित किया है। अतः आप अपने महत्वपूर्ण काव्य सृजन के लिए सदैव स्मरणीय रहेंगे।

प्रश्न क्र.

प्र० - 17 का उत्तर

महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय :-

I) दो रचनाएँ :- 1. दीपशिखा
2. यामा

II) भाषा :-
महादेवी वर्मा जी की भाषा सरल, सहज एवं सुस्पष्ट है। आपने अपनी रचनाओ में ऐसे प्रसंगों का वर्णन किया है जिनकी साधारणता हमारा ध्यान नहीं खींचती किन्तु महादेवी जी की करुणामयी और मर्मभेदी दृष्टि उन साधारण दृश्यों से असाधारण तत्वों का संधान करती है। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपनी रचनाओं में तत्सम-तद्भव और देशज शब्दों का प्रयोग भी किया है।

शैली :-
महादेवी जी ने अपनी रचनाओं में विभिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग भी किया है। उन शैलियों में प्रमुख हैं— वर्णात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, चित्रात्मक, आत्मपरक इत्यादि। आपने विभिन्न शैलियों का बहुत ही सुन्दर उपयोग अपनी रचनाओ में किया है।

कुल अंक

प्रश्न क्र.

(iii) साहित्य में स्थान :-

साहित्य सेवी और समाज सेवी दोनों ही रूपों में महादेवी वर्मा की प्रतिष्ठा रही है। कविता के क्षेत्र में यदि वे छायावाद के चार स्तंभों में से एक मानी जाती है तो अपनी संस्मरणात्मक रेखाचित्रों के कारण वे एक अप्रतिम गद्यकार के रूप में प्रतिष्ठित है। आपको भारत सरकार ने कई पुरस्कारों से सम्मानित किया है जैसे- ज्ञानपीठ पुरस्कार पद्मभूषण आदि। आप हिन्दी के साहित्यिक इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेंगी।

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्र०-18 का उत्तर (अथवा)

मुहावरे और लोकोक्ति में अंतर :-

मुहावरा	लोकोक्ति
मुहावरे वाक्यांश होते हैं।	1. लोकोक्तियाँ पूर्ण वाक्य होती हैं।
2. मुहावरों का प्रयोग वाक्य के आदि, मध्य या अंत में किया जाता है।	2. लोकोक्तियों का प्रयोग वाक्य के अंत में किया जाता है।
3. मुहावरों में वाक्य के अनुसार परिवर्तन होता है।	3. लोकोक्तियों में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता।
उदा०→ 'नौ दो ग्यारह होना'।	उदा→'अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।'

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL
मध्यप्रदेश
कुल अंक
प्रश्न क्र.

प्र०-19 का उत्तर (अथवा)

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

"राष्ट्रीय भावना - - - - - - - कहा है।"

प्रश्न / उत्तर :-

(i) "राष्ट्रीय भावना और देश प्रेम" इसका उचित शीर्षक है।

(ii) राष्ट्रीय भावना में शौर्यभाव का विशिष्ट स्थान है।

(iii) 'सुदीर्घ' शब्द का अर्थ → बहुत बड़ा या विशाल।

www.addyindia.com

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्र० -२० का उत्तर

निम्नलिखित पद्यांश की संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :-

संकेत :- "किसबी, किसान - - - - - - - - - - आगि पेट की |"

: प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'आरोह-भाग-२' के काव्य खण्ड के 'कवितावली' शीर्षक से लिया गया है जिसके कवि भक्तिकाल के सगुण भक्तिधारा के रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि "गोस्वामी तुलसीदास जी" हैं |

प्र॰: प्रस्तुत पद्यांश में गोस्वामी तुलसीदास जी ने बताया है कि सभी लोग इस संसार में पेट भरने के लिए कुछ भी कर सकते हैं | वे कहते हैं कि -

व्याख्या :- तुलसीदास जी कहते हैं कि इस संसार में किसान, बनिया, भिखारी, चोर आदि सभी पेट भरने के लिए ही कार्य करते हैं | पेट की आग का शमन करने के लिए वे हर ऊँचे-नीचे, धर्म-अधर्म के कार्य करते हैं | उन्हें अपनी पेट की आग को बुझाने के लिए जो भी करना हो, वे कर देते हैं | कवि आगे कहते हैं कि पेट की आग को समाप्त करने के लिए वे अपने बेटा-बेटी तक को बेच देते हैं |

योग पूर्व पृष्ठ
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

वे हर संभव कार्य यहाँ तक की धर्म-अधर्म को भी भूल जाते हैं पेट की आग का शमन करने के लिए।

आगे तुलसीदास जी कहते हैं कि लोगो को इतना समझ लेना चाहिए कि पेट की विशाल आग का शमन प्रभु श्री राम ही कर सकते हैं। अतः वे प्रभु श्री राम के भक्त हैं और उनके रहते वे कभी भूखे नहीं रह सकते।

वि:- 1. तुलसी ने रामभक्ति को प्रकट किए हैं।
2. पेट की आग को समुद्र की आग से विशाल बताया गया है।
3. भाषा सरल, सहज एवं सुस्पष्ट है।
4. ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र०-२१ का उत्तर

निम्नलिखित गद्यांश की व्याख्या संदर्भ-प्रसंग सहित कीजिए :-

संकेत :- "यह शिरीष - - - - - - - - - - मस्त रहते हैं।"

स[illegible] :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक "आरोह-भाग २" के गद्य खण्ड के शीर्षक "शिरीष के फूल" से अवतरित है जिसके लेखक सुप्रसिद्ध "हजारी प्रसाद द्विवेदी जी" हैं।

[illegible]ग :- प्रस्तुत गद्यांश में द्विवेदी जी ने शिरीष के फूल की तुलना अवधूत (सन्यासी) से की है। और बताया है कि-

व्याख्या :- द्विवेदी जी कहते हैं कि शिरीष एक अद्भुत अवधूत (सन्यासी) की तरह है जो हमेशा अजेयता का मंत्र देता है। जिस प्रकार सन्यासी व्यक्ति सुख-दुख एवं कठिनाइयों में भी खुशी एवं आनंद का मंत्र खोज लेते हैं, उसी प्रकार शिरीष भी ठंडी, गर्मी, उमस, ~~बारिश~~ बरसात आदि स्थितियों में भी खिला रहता है और वातावरण को महकाता रहता है तथा अजेयता का संदेश देता रहता है। वह कठिनाइयों में भी जीवन का रस खींच लेता है। और अपनी मस्ती में मगन रहता है और वातावरण को महकाते हुए यह संदेश देता

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

है कि हर परिस्थिति का हमें डटकर सामना करना चाहिए।

विशेष :- 1. भाषा सरल, सहज एवं सुस्पष्ट है।
2. शिरीष की तुलना अवधूत से की गई है।

प्रश्न क्र.

प्र०-२२ का उत्तर (अथवा)

सिविल लाइन,
इन्दौर (म० प्र०)

दिनाँक :- 06 फरवरी २०२५

प्रिय मित्र अमित,

सादर नमस्कार।

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ और आशा करता हूँ की तुम भी वहाँ कुशलपूर्वक होगे। आज मैं तुम्हे पत्र लिखते हुए यह बताना चाहता हूँ कि मेरे बड़े भाई अनुज भइया की शादी तय हो गई है। विवाह समारोह के कार्यक्रम 25 फरवरी से शुरु हो जाएँगे। विवाह 2 मार्च को है। मैं चाहता हूँ कि तुम विवाह कार्यक्रमों के शुरु होने तक आ जाओ। हम दोनों मिलकर बड़े उल्लास के साथ आनंद उठाएँगे। मैं तुम्हारी प्रतिक्षा करूँगा। कार्यक्रमों का

शीर्घ ही आना। अपने बड़ों को मेरा प्रणाम कहना और छोटों को प्यार देना। तुम्हारी प्रतीक्षा रहेगी।

तुम्हारा प्रिय मित्र,
अ ब स

कुल अंक
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्र० - 23 का उत्तर

निबंध :-

प्रदूषण का बढ़ता प्रभाव

रूपरेखा :-

1. प्रस्तावना
2. प्रदूषण के कारण
3. प्रदूषण के दुष्परिणाम
4. प्रदूषण दूर करने के उपाय
5. उपसंहार

1. प्रस्तावना :-

आज हम विज्ञान के युग में जी रहे हैं। विज्ञान ने हमें बहुत प्रगतिशील उन्नति दी है किन्तु हमे बहुत से नुकसान भी दिए हैं। इनमें से एक है - प्रदूषण। प्रकृति के किसी भी तत्व जैसे वायु, जल आदि में आवांछनीय तत्वों का प्रवेश प्रदूषण कहलाता है। यह प्रदूषण भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं जैसे - वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, रेडियो एक्टिव प्रदूषण आदि।

सही कहा है —

पिछले पृष्ठ   पृष्ठ 24 के अंक
BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL
माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

"विज्ञान विकास कर सकता है तो विनाश भी कर सकता है।"

2. प्रदूषण के कारण :- प्रदूषण के कई कारण हैं जिनमें से कुछ निम्नानुसार हैं :-

- पेड़ों की कटाई।
- फैक्ट्रियों का गंदा पानी।
- फैक्ट्रियों का धुआँ।
- अस्पतालों से निकलता गंदा कचरा।

3. प्रदूषण के दुष्परिणाम :- प्रदूषण के कई दुष्परिणाम हैं जैसे कि ग्लोबल वार्मिंग का बढ़ना, ग्लेशियर का पिघलना, ओजोन लेयर में छेद, इत्यादि। यदि इनके प्रति जल्दी-से-जल्दी कदम नहीं उठाए गए तो मानव जीवन का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा।

"प्रदूषण को दूर भगाओ, प्रदूषण को दूर भगाओ।
मानव जीवन को बचाओ, मानव जीवन को बचाओ।"

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

5 प्रदूषण दूर करने के उपाय :-

हर प्रकार के प्रदूषण से बचने का एक ही उपाय है। वह है कि अधिक से अधिक वृक्ष लगाएँ। वृक्ष लगाएँगे तो वर्षा चक्र सही चलेगा जिससे जल प्रदूषण दूर होता है। मौसम चक्र सही चलने लगेगा। वृक्ष ज्यादा होंगे तो वायु को शुद्ध करेंगे। इससे प्रदूषण को दूर किया जा सकता है। अतः हर प्रकार के प्रदूषण से बचने के लिए हमें ज्यादा से ज्यादा वृक्ष लगाने चाहिए।

"वृक्ष लगाओ, वृक्ष लगाओ।
प्रदूषण को दूर भगाओ।"

सत्य है कि —

"वृक्ष धरा के भूषण हैं,
करते दूर प्रदूषण हैं।"

उपसंहार :-

उपर्युक्त से स्पष्ट है कि प्रदूषण को दूर करने के लिए हमें ज्यादा से ज्यादा वृक्ष लगाने चाहिए। यदि ऐसा नहीं किया गया तो मानव जीवन संकट में आ जाएगा। इसके लिए सरकार और व्यक्ति सभी को मिल मिलकर प्रयास करना चाहिए।

मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

सत्य कहा गया है कि —

" ~~वृक्ष~~ वृक्ष है तो पर्यावरण है, पर्यावरण है तो धरती है।
धरती है तो हम सब हैं अन्यथा कुछ नहीं है।"